International Journal of Sanskrit Research 2020; 6(4): 33-35

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2020; 6(4): 33-35
© 2020 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 27-05-2020
Accepted: 29-06-2020

प्रीति रानी
शोधार्थिनी, संस्कृत विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, भारत

Corresponding Author:
प्रीति रानी
शोधार्थिनी, संस्कृत विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, भारत

वैदिक ऋषि परम्परा

प्रीति रानी

प्रस्तावना

भारतीय संस्कृति के इतिहास में वेदों का स्थान नितान्त गौरवपूर्ण है। श्रुति की दृढ आधारशिला के ऊपर भारतीय धर्म तथा सभ्यता का भव्य विशाल प्रासाद प्रतिष्ठित है। हिन्दुओं के आचार–विचार, रहन–सहन तथा धर्म–कर्म को भली भाँति समझने के लिए वेदों का ज्ञान विशेष आवश्यक है। अपने प्रातिभ चक्षु के सहारे साक्षात्कृधर्मा ऋषियों के द्वारा अनुभूत अध्यात्मशास्त्र के तत्त्वों की विशाल विमल शब्दराशि का ही नाम 'वेद' है।

स्मृति तथा पुराणों में वेद की पर्याप्त प्रशंसा उपलब्ध होती है। मनु के कथनानुसार वेद पितृगण, देवता तथा मनुष्यों का सनातन, सर्वदा विद्यमान रहने वाला चक्षु है।

पितृदेवमनुष्याणं वेदश्चक्षुः सनातनम्। [1]

अलौकिक तत्त्वों के रहस्य को जानने के लिए वेद की उपादेयता है। वेद का 'वेदत्व' इसी में है कि वह प्रत्यक्ष या अनुमान के द्वारा दुर्बोध तथा अज्ञेय उपाय का ज्ञान स्वयं कराता है। वेद को श्रुति, निगम, त्रायी, छन्दस, आम्नाय, ब्रह्मा आदि दूसरे नामों से भी जाना जाता है। वेद का ज्ञान गुरु–शिष्य–परम्परा से सुरक्षित रखा गया। [2]

ऋषि मन्त्र द्रष्टा के रूप में

भारतीय संस्कृति के इतिहास में वेदों का स्थान नितान्त गौरवपूर्ण है, और उतना ही महत्वपूर्ण स्थान ऋषियों का भी है। वेदरूप ज्ञान समाधिपरिपूत ऋषियों की दिव्य मनीषा में स्वतः स्फूर्त होकर उनके माध्यम से मन्त्ररूप से अभिव्यक्त हो जाता है। यह अप्रतिम वाणी अनन्त और असीम से निकल कर दिव्यदृष्टि सम्पन्न और साक्षात्कर्त्ता ऋषियों की आन्तर गुहा में प्रवष्टि हुई थी। दिव्यज्ञान के माध्यम भूत 'ऋषि' निश्चय ही अलौकिक अतीन्द्रिय क्रान्तद्रष्टा और सर्वज्ञ रहे। तभी यास्क ने आद्य ऋषियों की असाधारण विशेषता को निरूक्त में परिभाषित करते हुए कहा– 'साक्षात्कृतधर्माण ऋषयो बभूवुः' [3]– अर्थात ऋषियों ने समाधि की अलौकिक अतिविशिष्ट स्थिति में दिव्य चक्षुओं द्वारा मन्त्रों का प्रत्यक्ष दर्शन किया था। 'ऋषि' शब्द की दूसरी परिभाषा कात्यायन की है– 'यस्य वाक्यं स ऋषिः।' तदनुसार मन्त्ररूप वाक्यों के प्रणेता ऋषि है।

प्रत्येक वैदिक मन्त्र का किसी न किसी ऋषि के साथ निश्चित सम्बन्ध अनुक्रमणी ग्रन्थों में निर्दिष्ट है। यास्क द्वारा ऋषियों को मन्त्रों का दृष्टा बताया गया है–

''ऋषयः मन्त्राद्रष्टारः'' [4]

वैदिक मन्त्रों के अनुशीलन से यह प्रतीत होता है कि ऋषियों को अलौकिक सामर्थ्य प्राप्त था। वेदों की ऋचाओं का साक्षात्कार करने वाले वैदिक ऋषि कहे जाते है। विश्वामित्र तथा वसिष्ठ आदि मन्त्रों के दृष्टा 'ऋषि' कहलाते है। प्रत्येक वैदिक सूक्त के उल्लेख के साथ एक ऋषि का नाम आता है। कुछ विशिष्ट वैदिक ऋषि हुए है जो इस प्रकार है– विश्वामित्र, पराशर, अपाला, अगिंरा, वशिष्ठ, कश्यप आदि। ऋषिगण पवित्र पूर्व काल के प्रतिनिधि है तथा साधु माने गए है। उनके कार्यों को देवताओं के कार्य के तुल्य माना गया है।

वैदिक ऋषि परम्परा– वेद विभिन्न ऋषियों तथा उन में से कुछ ऋषियों के वंशजों द्वारा दृष्ट मन्त्रों का संग्रह है देव तथा मानव के मध्य ऋषि वह जीवन्त माध्यम है जो दिव्यज्ञान को मानव तक लाने

और मनुष्य को उस दिव्य ज्ञान तक पहुँचाने का मार्ग बताता है। इस सृष्टि के गूढ़ रहस्यों को और सृष्टि व्यवस्था के संचालक नियमों को ऋषियों ने अपने तपोबल से जाना है। अतः ऋषियों को ऋतसाप, ऋतवान् और ऋतावृध भी कहा गया है।

श्रीमद्भागवत पुराण के अनुसार कृष्ण द्वैपायन वेदव्यास ने मूल वेद को चार भागों में विभाजित करने अपने चार शिष्यों को पढ़ाया था और शताब्दियों तक चार मूल संहिताओं का अध्ययन–अध्यापन गुरु–शिष्य परम्परा से चलता रहा।

मूल वेद में से ऋग्वेद पैल ऋषि को, यवुर्वेद वैशम्यापन ऋषि को, सामवेद जैमिनी ऋषि को तथा अथर्ववेद सुमन्तु ऋषि को पढ़ाया था। [5] इस प्रकार ऋषि परम्परा वेदों के आरम्भ से ही चली आ रही है। वेदों का ज्ञान पूर्ण तथा सत्य है। ऋषि मन्त्रों के कर्ता न होकर उनका मनन द्वारा साक्षात् करने वाले द्रष्टा है। [6] ज्ञान परम्परा अनन्तकाल से चली आ रही हैं और अनन्त काल तक चलती रहेगी।

प्रलय होने पर भी यद्यपि ये मन्त्रा लुप्त हो जाते हैं लेकिन ईश्वरीय ज्ञान होने के कारण यह ज्ञान ईश्वर में ही बना रहता हैं। सृष्टि के प्रारम्भ में पुनः ऋषियों के अन्तःकरण में स्फुरण द्वारा प्रकट हो जाता हैं। और ऋषि इस वेदज्ञान को पुनः प्रवर्तित कर देते हैं। इस प्रकार यह ऋषियों द्वारा वेदों की ज्ञान की परम्परा चलती रहेगी।

ऋग्वेद के वंशमण्डलो के ऋषि–

वैदिक संहिताओं में चार प्रमुख है– ऋक्, यजुः, साम तथा अथर्व, ऋक् संहिता सबसे प्राचीन मानी जाती है। ऋग्वेद के वंशमण्डलों (2–7) में, जिनमें अनेक सूक्तों का एक ही ऋषि प्राप्त होता है। मण्डल अनुसार ऋषि के नाम अग्रलिखित है–

द्वितीय मण्डल– गृत्समद
तृतीय मण्डल– विश्वामित्र
चतुर्थ मण्डल– वामदेव
पंचम मण्डल– अत्रि
षष्ठ मण्डल– भरद्वाज
सप्तम मण्डल– वसिष्ठ

महर्षि गृत्समद– ऋग्वेद के द्वितीय मण्डल के द्रष्टा महर्षि गृत्समद थे। गृत्समद सदा प्रभु की स्तुति करते थे। सदा प्रसन्नचित रहते थे। अंगों की शक्ति से सम्पन्न थे। जहाँ उनका निजी जीवन बहुत ही सुन्दर था, वहाँ सामाजिक जीवन में भी यह 'शौनहोत्र' है (शुनं सुखं जुहोंति) लोक संग्रह के लिए अपने सुख की आहुति दे देते थे। [7] वह धन की याचना करते थे तो दान देने के लिए।

'करोति इति कूर्मः' जो करता है वह कूर्म कहलाता है। [8] प्रजापति ने यदि कूर्म नाम पाया तो इसलिए कि उसने 'प्रज्ञाः अकरोत्' प्रजाओं को बनाया। प्राण यदि कूर्म है तो वह भी इसलिए कि 'प्राणों हीमाः सर्वाः प्रजाः करोति' यह प्राण सब प्रजाओं का निर्माण करता है। [9] यह कूर्म 'गृत्समद' है– खूब स्तुति करने वाला और प्रसन्न रहने वाला है। द्वितीय मण्डल के 43 सूक्तों में से 38 सूक्तों के द्रष्टा गृत्समद ऋषि ही है।

महर्षि विश्वामित्र– महर्षि विश्वामित्र ऋग्वेद के तृतीय मण्डल के द्रष्टा थे। पुरूवंशी महाराज गाधि के पुत्र और एक प्रसिद्ध ऋषि थे। जो क्षत्रिय होते हुए भी अपने तप और बल से ब्रह्मार्षियों में परिभाषित हुए थे। इनका क्षत्रिय दशा का नाम 'विश्वरथ' था। परन्तु ब्राह्मणत्व भी प्राप्ति पर ये 'विश्वामित्र' के नाम से विख्यात हुए।

'क' तनोति इति कतः' [10] सुख का विस्तार करने वाला या कतक फल की तरह अपनी स्थिति से सभाव रूप जलाशय को निर्मल करने वाला यह 'कतः' सभी का मित्र है– इसीलिये यह 'वैश्वामित्र' कहलाया था। इन विश्वामित्रों को प्रभु कृपा से 'बृहद् वयः शशमानेषु धेहि। रेवदग्ने विश्वामित्रेषु शंयोः' वृद्धिशील जीवन, प्रशस्तधन, रोगोपशमन, भयों का दूर होना प्राप्त होता है। [11] यह ऋषि सदा प्रभु की महिमा का गुणगान करने या स्त्रोतों का गायन करने से 'गाथी' कहलाया। प्रभु की कृपा से ही यह गुप्त विधा के कोश को ढूंढ पाने में समर्थ हुए और इस विद्या का खूब प्रचार किया। इस प्रकार प्रकाश करने के कारण इनका नाम 'कौशिक' भी हो गया।

महर्षि विश्वामित्र का पूरा जीवन परोपकार में व्यतीत हुआ। यह प्रभु को भी 'गृत्सं कवि विश्वविदम् अमूरम्' उपदेष्टा क्रान्तदर्शी सर्वज्ञ मेधावी के रूप में ही देखता है। [12] ऐसा बनना ही इसका आदर्श है।

महर्षि वामदेव– महर्षि वामदेव ऋग्वेद के चतुर्थ मण्डल के सूत्तद्रष्टा, गौतम ऋषि के पुत्र थे। वाम सुन्दर देव दिव्यगुणों वाला होने के कारण इस ऋषि का नाम वामदेव हुआ था। गौतम का शब्दार्थ उत्तम विद्यायुक्त जन था। उत्तम ज्ञान से जो सम्पन्न गौतम है उन्हीं से ही यह वामदेव है। वामदेव द्वारा प्रार्थना की है–

विश्वा द्वेषांसि प्रमुमुग्धि अस्मत् अर्थात् हमें सब द्वेषों से दूर करो। [13] तमंहसः पीपरो दाश्वांसम् अर्थात् सर्म्पण करने वाले मुझे पाप से पार करो। [14] सुरभि नो मुखा करत् अर्थात् हमारे मुखों को सुगन्धित करो। हम शुद्ध शब्द बोलने वाले हो। [15]

इस प्रकार महर्षि वामदेव ऋग्वेद के चतुर्थ मण्डल के रूप में वर्णित है।

महर्षि अत्रि– ऋग्वेद के पंचम मण्डल के द्रष्टा महर्षि अत्रि थे। इनकी उत्पत्ति ब्रह्मा के नेत्र से हुई थी। सप्तऋषियों में एक विशिष्ट ऋषि थे। श्रीमद्भागवत के अनुसार कर्दम मुनि तथा देवहूति की पुत्री अनसूया इनकी धर्मपत्नी थी। इनके तीन पुत्र थे– दत्त, दुर्वासा एवं चन्द्र।

श्रीमद्भगवत के अनुसार ये ब्रह्मार्षी के दस मानस पुत्राों मे से एक थे। इनका आश्रम दण्डक वन में था। जहाँ चित्राकूट से पचवटी जाते समय श्रीराम जानकी व लक्ष्मण सहित पधारे थे।

मनुष्य जब संसार को सत्य समझ कर अपना जीवन व्यतीत करने लगता है तो संसार में लिप्त हो जाता है। और कुछ जीवन के कटु अनुभव होने के कारण संसार की सत्यता छिन्न–भिन्न होने लगती है उस विक्षिप्तावस्था में वह प्रभु की ओर ध्यान करते है। [16] महर्षि अत्रि एक विशिष्ट ऋषि थे। ऋग्वेद से सूक्तों में महर्षि अत्रि को अनेक नामो से सम्बोधित होते है जैसे गाय अर्त्र, पुरु अत्रि, वव्रि अत्रि, सस, गातु अर्त्र इत्यादि।

महर्षि भरद्वाज– महर्षि भरद्वाज षष्ठ मण्डल के द्रष्टा है। वैदिक ऋषियों में भरद्वाज ऋषि का उच्च स्थान है। भरद्वाज के पिता बृहस्पति और माता ममता थी। भरद्वाज ऋषि राम के पूर्व हुए थे। ऋषि भरद्वाज के पुत्रों में 10 ऋषि ऋग्वेद के मन्त्रद्रष्टा है।

बार्हस्पत्य भारद्वाज–बृहस्पति का पुत्र बार्हस्पत्य है। बृहस्पति देवगुरू है– विद्वानों का भी विद्वान। यह बार्हस्पत्य केवल विद्वान नहीं, यह 'भरद्वाज' भी है। इसने अपने अन्दर शक्ति का भरण किया है। [17] शयुः बार्हस्पत्य– 'शंयुः शमनं च रोगाणां यावनं च भयानाम्' इन शब्दों के द्वारा यह स्पष्ट है कि शंयु शरीर के दृष्टिकोण से नीरोग व स्वस्थ है, और मन की दृष्टि से निर्भय व शान्त है। [18] शयुं की प्रार्थना है ऐ इन्द्र हमारे से द्वेष व रोगों को दूर करे।

इनका चारों वेदों में ऋषित्त्व विद्यमान है। श्रीमद्भगवत पुराण में भरद्वाज ऋषि की उत्पत्ति का वर्णन प्राप्त होता है। इनके पिता बृहस्पति व माता ममता थी, भरद्वाज के वशंज का ज्ञान हमें षष्ठ मण्डल से प्राप्त होता है। षष्ठ मण्डल के 75 सूक्तों में से 59 सूक्तों के द्रष्टा ऋषि भरद्वाज ही है। [19]

महर्षि वसिष्ठ– ऋग्वेद के सप्तम मण्डल के द्रष्टा और गायत्री मन्त्र के महान साधक वशिष्ठ सप्तऋषियों में से एक थे। 'वक्षुश्च मनश्च मित्रावरूण' के अनुसार चक्षु और मन मित्रावरुण है। [20], उन को वश में रखने वाला यह मित्रा वरूण है। इन्द्रियों (चक्षु) और मन को वश में करने वाला यह वसिष्ठ है। यह प्रभु से कहते है कि 'त्वा युजा पृतनायु रभिष्याम्' तेरी साथी बनकर मैं, प्रलोभनों की सेना के साथ आक्रमण करने वाले कामादि शत्रुओं को जीत लू। [21] इस प्रकार महर्षि वसिष्ठ ऋग्वेद के सप्तम मण्डल के द्रष्टा के रूप में वर्णित है।

वैदिक ऋषि दीर्घतमा– ऋग्वदे अनेक ऋषियों के द्वारा दृष्ट मन्त्रों की संहिता है। उनमें से द्वितीय से सप्तम मण्डल तक वंशमण्डल हैं उनमें क्रमशः गृत्समद, विश्वामित्र, वामदेव, अत्रि भरद्वाज तथा वसिष्ठ है। प्रथम मण्डल में मुख्यरूप से मधुच्छन्दा, जेता, सहदेव, सुराधस, अगस्त्य, दीर्घतमा, लोमश आदि हैं। इन सबसे ऋषि दीर्घतमा का विशेष स्थान है। [22] मण्डल के 140 से 164 संख्यक सूक्तों का दर्शन किया है। इस प्रकार दीर्घतमा दृष्ट सूक्तों की संख्या पच्चीस है।
वह अपने तमस् को दूर करने के लिए प्रयत्नशील है। इसका संकेत आरम्भ में ही इस प्रकार दिया गया है–

वेदि–सदे प्रिय–धामाय सु–द्यते,
धासिम्–इव प्र भर योनिम् अग्नेय।
वस्त्रोण–इव वासय मन्मना शुचिम्,
ज्योतिः– रथम् शुक्र–वर्णनम् तमः हनम्। [23]

मन्त्र से स्पष्ट होता है कि उक्त तम को नष्ट करनेवाला तमोहन अग्नि है जिसके लिए 'योनि' का सम्पादन करना है और फिर उस (अग्नि) को उस योनि में आच्छादित करना है। ये दोनों काम 'मम्म' द्वारा होते हैं। इसलिए अग्नि को मम्मसाधन कहा गया है।
दीर्घतमा के सूक्तों का उपसंहार 'अपां गर्भम्' इसी मन्त्रा द्वारा होता है। [24] उसी का उल्लेख हम अथर्ववेदीय प्राण सूक्त के उपसंहार में भी पाते है।

ऋग्वेद में ऋषि शब्द का प्रयोग– ऋग्वेद का स्थान तथा गौरव सबसे अधिक है। ऋग्वेद के 10 मण्डल हैं उनमें से द्वितीय से सप्तम मण्डल तक वंशमण्डल ही हैं। जिनके ऋषि गृत्समद, विश्वामित्र, वामदेव, अत्रि, भरद्वाज व वसिष्ठ हैं। इस प्रकार ऋग्वेद के सभी मण्डलों के सभी सूक्तों के ऋषि, देवता व छन्द हैं। इस प्रकार ऋषि, देवता व छन्द हैं। इस प्रकार ऋषि शब्द का बार–बार प्रयोग हुआ हो प्रत्येक सूक्त का अपना एक ऋषि है।
ऋग्वेद में ऋषि शब्द का प्रयोग 37 बार हुआ है। कुछ मण्डल अनुसार ऋषि शब्द के प्रयोग के कुछ उदाहरण अग्रलिखित है–

(क) सं. माग्ने वर्चसा सृज सं प्रजया समायुषा।
वद्युर्मे अस्य इन्द्रों विद्यात्सह ऋषिभिः।। [25]

(ख) असाभ्योजो विभृथा सुदानवोऽसामि धूतयः शवः। [26]
ऋषिद्विषे मरूतः परिमन्यव इषुं न सृजत द्विषम्।।

प्रस्तुत मन्त्र में ऋषि शब्द का प्रयोग इन्द्रदेव के अनुष्ठान जानने के विषय में आया है कि इन्द्रदेव ऋषि के साथ जाने।

(क) तुभ्यं स्तोका घृतच्श्युतोऽग्ने विप्राय सन्त्य। [27]
ऋषिः श्रेष्ठः समिध्यसे यज्ञस्य प्राविता भव।।

श्रेष्ठ क्रान्तदर्शी घृतादि द्वारा भली प्रकार प्रज्वलित होते है इस प्रकार ऋषि शब्द का प्रयोग हुआ।

(क) अहं मनुरभव सूर्य श्चाहं कक्षीवाँ ऋषिरस्मिविप्रः। [28]
अहं कृत्सार्जुनेयं न्यृञ्जेऽहं कविरूशना पश्यता भा।।

प्रस्तुत मन्त्र में विवेकी कक्षीवान् ऋषि व क्रान्तदर्शी उशना ऋषि के रूप में ऋषि शब्द का प्रयोग हुआ है।
इस प्रकार प्रस्तुत शोधपत्र में वैदिक ऋषि परम्परा का वर्णन किया गया। ऋग्वेद में वंशमण्डलों के ऋषियों का वर्णन प्रस्तुत किया गया। ऋषि शब्द का प्रयोग दर्शाया गया जिससे ऋषि की महत्ता का प्रतिपादन होता है। वैदिक ऋषि परम्परा से वेदों का ज्ञान अनन्त काल तक चलता रहेगा। वेद ज्ञान की परम्परा समृद्ध रूप में वर्णित रहेगी। इस प्रकार वैदिक ऋषि परम्परा का सविस्तर विवेचन किया गया।

संधर्व सूची

1. मनु. 2.94
2. वैदिक साहित्य एवं सस्कृति, आचार्य बलदेव उपाध्याय, पृष्ठ 3
3. नि. 1.20
4. नि. 1.7
5. तदृग्वेदध्रः पैलः सामग्रो जैमिनि कविः। वैश्म्पायन एवैको निष्णातो यजुषामुत। अथर्वाङ्गिरमामासीत्सुमन्तुर्दारूणी मुनिः। (श्रीमद्भागवत् पु. 1–4. 21–22)
6. ऋग्वेद के ऋषि, मनोहर विद्यालंकार, पृष्ठ 11
7. ऋग्वेद के ऋषि, मनोहर विद्यालंकार, पृष्ठ 42
8. ऋग्वेद के ऋषि, मनोहर विद्यालंकार, पृष्ठ 43
9. ऋग्वेद के ऋषि, मनोहर विद्यालंकार, पृष्ठ 43
10. ऋग्वेद के ऋषि, मनोहर विद्यालंकार, पृष्ठ 45
11. ऋग्वेद–3.18.4
12. ऋग्वेद–3.19.1
13. ऋग्वेद–4.1.4
14. ऋग्वेद–4.2.8
15. ऋग्वेद–4.39.6
16. ऋग्वेद के ऋषि, मनोहर विद्यालंकार, पृष्ठ 51
17. ऋग्वेद–6.1.14
18. ऋग्वद–4.21
19. वेद मीमांसा, डॉ. विश्वम्भर दयाल अवस्थी, पृष्ठ, 302–306
20. ऐ.–2.26
21. 'त्वा युजा पृतनायु रभिष्याम्' ऋग्वेद– 7.11.3
22. वैदिक ऋषि दीर्घतमाः, डॉ. राशि तिवारी, पृष्ठ 12
23. ऋग्वेद– 1.140.1
24. दिव्यम् सु–पर्णम् वायसम् बृहन्तम्, अपाम् गर्भम् दर्शतम् अभीपतः दृष्टिभिः तर्पयन्तम्, सरस्वन्तम् ओषधीनाम्। अवसे जोहवीमि। ऋ. 1.164.52
25. ऋग्वेद–1.23.24
26. ऋग्वेद–1.39.10
27. ऋग्वेद–3.21.3
28. ऋग्वेद–4.26.1